कृषि नवाचार

ISSN: 3048-6092
https://www.krishinavachar.in
खण्ड 02 भाग 08 नवम्बर, 2025

भिंडी में फल एवं तना छेदक कीट की पहचान, नुकसान एवं नियंत्रण

गौतम पारीक[1*] और सौरभ सिंह[2]

[1]शोध छात्र (कीट विज्ञान विभाग), कृषि विज्ञान संस्थान, बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झांसी (उ.प्र.)

[2]सहायक प्राध्यापक (कीट विज्ञान विभाग), कृषि विज्ञान संस्थान, बुंदेलखंड वि.वि., झांसी (उ.प्र.)

***E-mail: pareekgautam30@gmail.com**

भिंडी को वैज्ञानिक भाषा में ऐबेलमोस्कस एसक्यूलेंटस कहा जाता है। यह मालवेसी कुल की एक महत्वपूर्ण सब्जी वालि फसल है। यह मुख्य रूप से खरीफ मौसम की प्रमुख फसलों में शामिल है तथा गर्म एवं आर्द्र जलवायु में अच्छी उत्पादन देती है। इसका उत्पत्ति स्थान अफ्रीका माना जाता है लेकिन वर्तमान में इसकी खेती पूरे भारत में सफलतापूर्वक की जा रही है। भिंडी एक स्वपरागित एवं वार्षिक फसल है, भिंडी में मूसला जड़ प्रणाली पाई जाती है । इसके फल कोमल अवस्था में तुड़ाई योग्य होते हैं, जिनमें पर्याप्त मात्रा में कार्बोहाइड्रेट, कैल्शियम, पोटैशियम, विटामिन 'ए', प्रोटीन तथा घुलनशील फाइबर पाया जाता है। खेती की दृष्टि से भिंडी की फसल अच्छी जल निकास वाली दोमट मिट्टी, 25-35 डिग्री सेल्सियस तापमान तथा पर्याप्त धूप में सर्वोत्तम रहती है।

परिचय

भिंडी का प्रमुख कीट है फल एवं तना छेदक जिसे वैज्ञानिक रूप से 'एरियस विटेला कहा जाता है। यह कीट विशेष रूप से नवीन कोमल तनों, शाखाओं, और विकसित होते फलों पर हमला करते हैं, जिससे फसल की बढ़वार रुक जाती है और उत्पादन में भारी कमी आ सकती है।

पहचान

अंडे छोटे गोल से चपटे आकार के होते हैं। इनका रंग शुरुआत में सफ़ेद या क्रीम होता है बाद में पीला दिखने लगता है। मादा कीटअपने अंडे कोमल पत्तियों, कलियों, और फूलों की सतह पर अलग-अलग समूह में देती है। इन अंडों का आकार 0.5 से 1 मिमी तक का होता है। सुंडी अवस्था फसल में सबसे अधिक नुकसान पहुंचाती है। नवजात सुंडी हल्के हरे रंग की तथा छोटी होती है। बढ़ते हुए लार्वा का रंग हल्का भूरा होता है। सुंडी पेड़ के कोमल तने में छेद करके अंदर घुस जाती है और अंदर का भाग खाती है। बाहर सिर्फ मल या काला चूर्ण जैसा पदार्थ दिखता है तथा संक्रमित तना मुरझा जाता है। प्यूपा भूरे रंग का होता है। ये मिट्टी की ऊपरी सतह पर, सूखे पदार्थों में पाया जाता है। यह रेशमी कोकून बनाकर उसमें छिप जाता है। कोकून पतला, हल्का और अक्सर मिट्टी या सूखे पदार्थों में छिपा हुआ पाया जाता है। इस अवस्था में कीट गतिहीन होता है। वयस्क कीट एक छोटा पतंगा होता है। कीट आगे के पंख हरे होते हैं। पंखों के किनारों पर सफेद पट्टी रहती है। शरीर पतला और लंबाई 1-1.5 सेमी होती है।

अनुकूल परिस्थितियाँ

25 से 35 डिग्री सेल्सियस तापमान इस कीट के विकास के लिए सबसे उपयुक्त है। 60-80 प्रतिशत सापेक्ष आर्द्रता कीट की वृद्धि के लिए अनुकूल है। फसल की घनी अवस्था और हवा का संचलन कम होना । लगातार तुड़ाई में देरी होना। पास में कपास आदि फसलों की मौजूदगी में कीट संक्रमण की संभावना बढ़ जाती है।

फल एवं तनाछेदक कीट का नियंत्रण

पारंपरिक नियंत्रण

- फसल चक्र अपनाएँ।
- फसल की समय पर बुवाई करें।
- फसल में खरपतवार नियंत्रण करें।
- नाइट्रोजन युक्त उर्वरकों के संतुलित मात्रा में उपयोग करें।

जैविक नियंत्रण

- ब्यूवेरिया बेसियाना का 1-2 ग्राम प्रति 1 लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।
- वर्टिसिलियम लेकानी 2-3 ग्राम प्रति 1 लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।
- बैसिलस थुरिंजिएंसिस का छिड़काव करें।
- नीम बीज कर्नेल अर्क का 5 प्रतिशत का छिड़काव करें।
- लेडी बर्ड बीटल का उपयोग करें।

रासायनिक नियंत्रण

- स्पिनोसेड 45 प्रतिशत एस.सी का छिड़काव करें।
- क्लोरांट्रानिलीप्रोल 18.5% डब्ल्यू. जी का छिड़काव करें।
- पाइमेट्रोजाइन 50 प्रतिशत डब्ल्यू. जी का छिड़काव करें।

निष्कर्ष

भिंडी की फसल में फल एवं तना छेदक जैसे प्रमुख कीटों का प्रभावी प्रबंधन समय पर और वैज्ञानिक ढंग से अपनाई गई दवाई (रासायनिक कीटनाशक), जैव एजेंट (मित्र कीट), तथा नीम आधारित उत्पादों के सम्मिलित उपयोग पर निर्भर करता है। इन उपचारों से कीट प्रकोप में कमी और उत्पाद (उत्पादन) में बढ़ोतरी देखी गई है।